पौलुस पर मुकदमा
(24:1-23)

किसी मण्डली को एक सुसमाचार प्रचारक (इवेंजलिस्ट) की आवश्यकता थी। प्राचीनों में से एक यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि कलीसिया को कैसा प्रचारक चाहिए। इस काम के लिए, उसने एक पत्र तैयार किया और उसे मण्डली के सामने ऐसे पढ़ा जैसे यह प्रार्थी की ओर से मिला हो:

> हे भद्रपुरुषो:
>
> यह जानते हुए कि आपको एक प्रचारक की आवश्यकता है, मैं अपने आपको प्रार्थी के रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूं।
>
> मुझ में ऐसे बहुत से गुण हैं जो मुझे लगता है कि आपको पसन्द आएंगे। मुझे सामर्थ से प्रचार करने की आशीष मिली है और लेखक के रूप में भी कुछ सफल हो चुका हूं। कुछ लोग कहते हैं कि मैं एक अच्छा प्रबन्धक हूं। जिन जगहों पर मैं गया उनमें बहुत सी जगहों पर मैं अगुआ ही रहा हूं।
>
> परन्तु, कुछ लोग, मेरा विरोध करते हैं। मेरी आयु पचास वर्ष से अधिक है। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं है, परन्तु मैं कोई भी काम कर लेता हूं। मैं कभी भी एक स्थान पर तीन वर्ष से अधिक समय नहीं रहा। बहुत सी मण्डलियां जिनमें मैंने प्रचार किया, छोटी-छोटी थीं। आम तौर पर मुझे अपने निर्वाह के लिए काम-धन्धा करना पड़ता है। मेरा हिसाब इतना अच्छा नहीं है (यहां तक कि मुझे उन लोगों को भूल जाने वाला माना जाता है जिन्हें मैंने बपतिस्मा दिया होता है)।
>
> कई नगरों के धार्मिक अगुओं से मेरे सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं रहे। वास्तव में, उनमें से कइयों ने मुझे धमकाया, मुझे जेल ले गए और यहां तक कि मुझ पर आक्रमण भी किया। मेरे काम से जब दंगे और गड़बड़ियां हुईं तो मुझे कई जगह जल्दी में शहर छोड़कर भागना पड़ा। मैं तीन-चार बार जेल भी काट चुका हूं, परन्तु किसी अपराध के कारण नहीं।
>
> यदि आप मेरी सेवा लेना चाहें, तो मैं आपके लिए काम करने की पूरी कोशिश करूंगा, चाहे मुझे अपना खर्चा चलाने के लिए और काम ही क्यों न करना पड़े।[1]

पत्र पढ़ने के बाद, उस प्राचीन ने सदस्यों से पूछा कि क्या उन्हें यह प्रार्थी पसन्द है। सभी सदस्यों का मानना था कि उसे उस मण्डली के लिए वहां पर बिल्कुल नियुक्त नहीं किया जाए। वे किसी अस्वस्थ, झगड़ालू, समस्याएं पैदा करने वाले पूर्व-दोषी को प्रचारक

के रूप में नियुक्त नहीं करना चाहते थे, और उन्हें इस बात में अपमान महसूस हुआ कि ऐसे व्यक्ति का प्रार्थना पत्र उनके सामने लाया गया था। परन्तु, किसी ने उस प्रचारक का नाम पूछ लिया। प्राचीन का उत्तर था, ''प्रेरित पौलुस।''

प्रेरितों के काम के अन्तिम सात अध्याय पौलुस को एक ''कारा-पक्षी'' अर्थात एक दोषी के रूप में बताते हैं, जो थोड़ा समय यरूशलेम में (22:24), फिर दो वर्ष कैसरिया में (23:33-35; 24:27) और उसके बाद कम से कम दो वर्ष रोम में रहा (28:16, 30)। पौलुस जेल के जीवन से अजनबी नहीं था। उसे जेल होती ही रहती थी (2 कुरिन्थियों 11:23)। हमने एक कारावास के बारे में पढ़ा था, जब पौलुस और उसके साथी को पीटकर फिलिप्पी में उनके पांव काठ में ठोक दिए गए थे (प्रेरितों 16)। परन्तु इससे पहले कभी भी इस प्रेरित को दिनों, हफ्तों, महीनों, वर्षों तक कारावास नहीं हुआ था। उसके सक्रिय होने, उसकी जीवन शैली के ओजस्वी होने के कारण पौलुस पर ऐसे मुकदमे चले जिनके बारे में उसने कभी सोचा तक नहीं था। परन्तु, इन अध्यायों को पढ़ते हुए मैं पौलुस का वह सकारात्मक व्यवहार दिखाना चाहता हूं जो परीक्षा के इस समय अन्त तक उसने बनाए रखा।[2]

पिछले पाठ में, हमने पौलुस को कैसरिया में लाकर राज्यपाल फेलिक्स के सामने पेश करते हुए देखा, जिसने उसे हेरोदेस के किले में कैद कर दिया था (23:23-35)। यह पाठ कैसरिया में पौलुस के पहले मुकदमे के बारे में है, यह उन बहुत से मुकदमों में से एक है जिनमें पांच या इससे अधिक वर्ष उसे जेल में बिताने पड़े।[3] ध्यान दें कि पौलुस पर आक्रमण हुए और उसकी बदनामी भी हुई, परन्तु उसने ''आनन्दित'' (24:10) रहना सीख लिया था।

एक झूठा आरोप (24:1-9)

पौलुस के यरूशलेम से सुरक्षित निकल जाने के बाद, पलटन के सरदार ने महासभा को सूचित किया कि कैदी को कैसरिया में ले जाया गया था। यह सम्भवत: बहुत ही संतोष की बात थी कि इस अधिकारी ने उन्हें बताया कि यदि वे मामले को आगे बढ़ाना चाहते हैं, तो उन्हें कैसरिया में जाकर अपना केस राज्यपाल फेलिक्स के सामने रखना होगा।[4] यहूदी अगुवे अवश्य ही आग बबूला हुए होंगे कि पौलुस फिर से उनके चंगुल से निकल गया, परन्तु वे हार मानने को अभी भी तैयार नहीं थे। कुछ दिनों में ही, वे फिर से उसे मारने की कोशिश करने के लिए तैयार थे।

''पांच दिन बाद[5] हनन्याह महायाजक[6] कई पुरनियों[7] और तिरतुल्लुस[8] नामक किसी वकील[9] को साथ लेकर [कैसरिया] आया;[10] उन्होंने हाकिम के साम्हने पौलुस पर नालिश की'' (आयत 1)। बूढ़ा याजक हनन्याह कैसरिया का साठ से अधिक मील का सफ़र करके दुखी तो होगा, परन्तु वह पौलुस को मारने के लिए कोई भी कष्ट उठाने को तैयार था। उसने और अन्य अगुओं ने अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए तिरतुल्लुस नामक एक निपुण वक्ता की सेवाएं लीं। ऐसा उन्होंने सम्भवत: इसलिए किया क्योंकि (1) तिरतुल्लुस रोमी कानून के बारे में उनसे अधिक ज्ञान रखता था, और (2) उन्होंने निश्चय ही चापलूसी

करने के लिए ऐसा किया होगा।

कैसरिया पहुंचने के बाद वे यहूदिया के रोमी राज्यपाल (हाकिम) अंटोनियुस फेलिक्स[11] के स्वागतकर्त्ताओं में शामिल हो गए।[12] पौलुस को अन्दर लाने के बाद (24:2क), तिरतुल्लुस ने फेलिक्स को सम्बोधित करते हुए ''जी मिचलाने वाली चापलूसी'' के साथ मामले की कार्यवाही आरम्भ की:[13]

> हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरे द्वारा हमें बड़ा कुशल होता है; और तेरे प्रबन्ध [अर्थात दूरदृष्टि] से इस जाति के लिए कितनी बुराइयां सुधरती जाती हैं। इस को हम हर जगह और हर प्रकार से धन्यवाद के साथ मानते हैं (आयतें 2ख, 3)।

असल में, फेलिक्स ने बहुत से विद्रोहियों को दबा दिया था;[14] परन्तु ऐसा उसने क्रूरता से किया था जिससे मध्यमार्गी यहूदी भी क्रोधित हो गए थे। यहूदिया के बहुत से नागरिक कहते कि जो भी शांति कायम थी वह उसके कारण नहीं, बल्कि उसके होते हुए थी। परन्तु फेलिक्स, जज और ज्यूरी दोनों ही था और तिरतुल्लुस ने उसे अपने पक्ष में करने के लिए कुछ भी कहना था।

इस चापलूस वकील ने आगे कहा: ''परन्तु इसलिए कि तुझे और दुख नहीं देना चाहता, मैं तुझ से बिनती करता हूं कि कृपा करके हमारी दो एक बातें सुन ले'' (आयत 4)। फिर तिरतुल्लुस ने पौलुस के विरुद्ध तीन आरोप लगाए, जो उतने ही झूठे थे जितनी उसकी चापलूसी:

पहला आरोप *व्यक्तिगत* था: ''क्योंकि हम ने इस मनुष्य को उपद्रवी ...'' पाया (आयत 5क) मूलत:, ''एक बीमारी, मरी'' पाया है! अन्य शब्दों में, ''पौलुस सबसे बड़ा गड़बड़ी फैलाने वाला है, ऐसा जिसे सही सोच वाला कोई भी व्यक्ति जीवित रहने की अनुमति नहीं देगा!''

अगला आरोप *राजनीतिक* था: ''और जगत के सारे यहूदियों में बलवा कराने वाला, और नासरियों के कुपन्थ का मुखिया पाया है'' (आयत 5ख)। इस आरोप में फेलिक्स की सबसे अधिक दिलचस्पी होगी, क्योंकि उसे रोमी सरकार की ओर से शांति बनाए रखने के लिए नियुक्त किया गया था। इस आरोप में कुछ सच्चाई थी, क्योंकि जहां भी पौलुस गया उनमें से अधिकतर स्थानों पर गड़बड़ी हुई थी।[15] परन्तु, यह अर्थ निकालना कि पौलुस ने गड़बड़ी पैदा की थी, गलत था।

वाक्यांश ''बलवा कराने वाला नासरियों के पंथ[16] का मुखिया'' पर ध्यान दें। पवित्र शास्त्र में मसीहियों के लिए यहां पहली बार ''नासरियों'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है। इस पदनाम का प्रयोग यहूदी लोग ''यीशु नासरी के अनुयायी'' के लिए करते थे।[17] यह बात उपहास स्वरूप कही जाती थी: ''क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?'' (यूहन्ना 1:46ख)।[18] तिरतुल्लुस ने इस तिरस्कृत समूह को ''पंथ'' कहा, इसलिए वह सम्भवत: यह सुझाव दे रहा था कि मसीहियत एक अवैधानिक धर्म[19] है और रोम को

इसे खत्म कर देना चाहिए।

अन्त में उस वकील ने एक *पवित्र* (अर्थात धार्मिक) आरोप लगाया: ''उसने मन्दिर को अशुद्ध करना चाहा'' (24:6क)। मूलत:, एशिया के यहूदी चिल्लाए कि पौलुस ने मन्दिर को अशुद्ध किया *था* (21:28); अब आरोप में कुछ नरमी थी कि ''उसने मन्दिर को अशुद्ध करना *चाहा।*'' यह आरोप अधिक अस्पष्ट हो गया था इसलिए इसे प्रमाणित या अप्रमाणित करना कठिन था। जैसे पहले टिप्पणी की गई, कि रोम की सरकार ने मन्दिर के अधिकारियों को यह अधिकार दे रखा था कि जो कोई मन्दिर को अशुद्ध करे, वे उसे मार डालें।[20]

तिरतुल्लुस ने और कहा:

> और हमने उसे पकड़ा। [हम अपनी धर्मव्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करना चाहते थे, किन्तु सेनापति लुसियास ने आकर इसे बलपूर्वक हमारे हाथों से छुड़ा लिया और इसके अभियोगियों को आपके पास भेजा] (आयतें 6ख, 7)।

अध्याय 22 में भीड़ के दृश्य को निष्पक्ष मुकदमे की तैयारी के लिए औपचारिक गिरफ्तारी कहना बहुत कठिन हो सकता है! वारेन वियर्सबे ने कहा, ''पौलुस की गिरफ्तारी के लूका के वृत्तांत की तुलना (प्रेरितों 21:27-40) पलटन के सरदार के वृत्तांत (प्रेरितों 23:25-30) और वकील के वृत्तांत (24:6-8) से करने पर आप अच्छी तरह समझ जाएंगे कि जज और ज्यूरी क्यों उलझन में पड़ सकते हैं।''[21] निश्चय ही, वकील को यह पता नहीं था कि फेलिक्स के पास पौलुस को यहूदियों के हाथों से बचाने के लिए लुसियास का लिखा हुआ पत्र था, वे उसे मारने की कोशिश कर रहे थे (23:27)।

आयत 6 का अन्तिम भाग, 7 आयत पूरी और 8 आयत का आरम्भ हिन्दी सहित बहुत सी प्राचीन पाण्डुलिपियों में नहीं मिलता। इस पाठ की सत्यता के लिए धर्मशास्त्र का प्रमाण अपर्याप्त है, इसलिए बहुत से अनुवादक इसे शामिल नहीं करते परन्तु इसे कोष्ठकों में, पाद टिप्पणियों आदि में डाल देते हैं। प्रेरितों के काम पर टीका में अपने ही अनुवाद के बारे में, साइमन किस्टमेकर ने व्याख्या की, ''वैस्टर्न टैक्स्ट में प्रमाणिकता का एक दायरा है। इसलिए, मैं इसके समावेश को रोकना नहीं चाहता परन्तु विवेकपूर्ण ढंग से इसे कोष्ठकों में रखता हूं।''[22] एफ. एफ. ब्रूस ने माना: ''वैस्टर्न जोड़ की शैली तिरतुल्लुस के बाकी भाषण से इतनी मेल खाती है कि इसे सत्य मानना ही पड़ता है।''[23]

पौलुस के विरुद्ध राज्यपाल के मन में पूर्वाग्रह उत्पन्न करने की पूरी कोशिश करके तिरतुल्लुस ने निष्कर्ष निकाला: ''इन सब बातों को जिन के विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, तू आप ही उसको जांच करके जान लेगा'' (आयत 8)। कोष्ठक वाले पद को निकाल दिया जाए, तो तिरतुल्लुस पौलुस की जांच की बात करता प्रतीत होता है;[24] इस पद को शामिल कर लिया जाए तो लगता है कि वह रोमी पलटन के सरदार (कमांडर) की बात कर रहा है।[25] दोनों परिस्थितियों में उस वकील ने यह दिखाया कि फेलिक्स को

सभी तथ्यों का पता चलने पर वह उनका ही पक्ष लेगा।

वहां पर, महायाजकों और प्राचीनों ने सुर से सुर मिला लिया। ''यहूदियों ने भी उसका साथ देकर कहा, ये बातें इसी प्रकार की हैं'' (आयत 9)।

आनन्द से प्रत्युत्तर (24:10-21)

यदि यहूदियों की यह इच्छा थी कि राज्यपाल पौलुस की जांच करे, तो उन्हें निराशा ही हाथ लगी। इसके बजाय, राज्यपाल ने केवल ''पौलुस को बोलने के लिए सैन किया,'' और पौलुस अपना प्रत्युत्तर देने लगा (आयत 10क)।

चापलूसी से आरम्भ करने के बजाय (ध्यान दें 1 थिस्सलुनीकियों 2:5क), पौलुस ने केवल यहूदियों के साथ व्यवहार के फेलिक्स के अनुभव की ही बात थी: ''मैं यह जानकर कि तू बहुत वर्षों से इस जाति का न्याय करता है, आनन्द से अपना प्रत्युत्तर देता हूं'' (आयत 10ख)।[26] प्रभु की सहायता से, परिस्थिति पर काबू रखे हुए यह प्रेरित बिना घबराए डटा रहा। यीशु ने वायदा किया था:

> ... वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएंगे, और राजाओं, और हाकिमों के साम्हने ले जाएंगे। पर यह तुम्हारे लिए गवाही देने का अवसर हो जाएगा। ... मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा, कि तुम्हारे सब विरोधी साम्हना या खण्डन न कर सकेंगे (लूका 21:12–15)।

राज्यपाल के सामने खड़े पौलुस को वह वायदा याद था।

उसने पहले इस आरोप का कि वह उपद्रवी था उत्तर दिया: ''तू आप जान सकता है, कि जब से मैं यरूशलेम में भजन करने [अर्थात गड़बड़ करने नहीं] को आया,[27] मुझे बारह दिन से ऊपर[28] नहीं हुए'' (आयत 11)। बारह दिनों का महत्व यह था कि पौलुस के पास विद्रोह की तैयारी के लिए यह समय बहुत कम था, और फिर, ये घटनाएं थोड़ी देर पहले ही हुई थीं, इसलिए फेलिक्स को गवाह इकट्ठे करने में कोई कठिनाई नहीं होनी थी जो यह बता सकते कि वास्तव में वहां क्या हुआ।

पौलुस ने आगे कहा, ''और उन्होंने मुझे न मन्दिर में न सभा घरों में, न नगर में किसी से विवाद करते या भीड़ लगाते पाया'' (आयत 12)। पौलुस सम्भवत: यरूशलेम के उन प्राचीनों को शांत करने की कोशिश में, जिन्हें चिन्ता थी कि उसकी उपस्थिति विनाशक हो सकती है, यरूशलेम में चुप रहा (21:22)।[29]

फिर प्रेरित पौलुस ने अपने आरोपियों को वहीं पकड़ा: ''न तो वे उन बातों को, जिनका वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं, तेरे साम्हने सच ठहरा सकते हैं'' (आयत 13)। सभा को उन आरोपों का प्रत्यक्ष ज्ञान बिल्कुल नहीं था; उन्होंने केवल सुनी सुनाई बातों पर विश्वास किया था। वे कोई गवाह नहीं लाए थे, केवल उनके पास एक चापलूस वकील

ही था। आरोप अपने आप में प्रमाण नहीं था।

परन्तु, पौलुस ने एक आरोप का दोष स्वीकार किया कि वह सचमुच एक मसीही है। ''परन्तु यह मैं तेरे साम्हने मान लेता हूं, कि जिस पन्थ को वे कुपन्थ[30] कहते हैं, उसी की रीति पर मैं अपने बापदादों के परमेश्वर की सेवा करता हूं'' (आयत 14क)। शब्द ''*अपने* बाप दादों के परमेश्वर'' पर ध्यान दें। उसने अभी भी अपनी पहचान न केवल यहूदियों के साथ बल्कि अपने आरोपियों के साथ करवाई। उसने कहा ''मैं अपने बापदादों के परमेश्वर की सेवा करता हूं और जो बातें व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में लिखी गई हैं, उन सब की प्रतीति करता हूं'' (आयत 14ख)। उसने यहूदियों के धर्म शास्त्र को नकारा नहीं; वास्तव में, उसका विश्वास था कि वे शास्त्र आने वाले मसीह तथा उसके राज्य की भविष्यवाणी करते हैं। ''पौलुस और आरम्भिक मसीही अपने आपको 'पूर्व यहूदी' नहीं बल्कि 'पूर्ण हुए यहूदी' के रूप में मानते थे,'' जो इब्राहीम की वास्तविक संतान थे (गलतियों 3:29)।

''भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में लिखी'' बातों के विषय में, उसने कहा, ''और परमेश्वर से आशा रखता हूं जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा''[31] (आयत 15)। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने पुनरुत्थान की बात की थी (देखिए दानिय्येल 12:2, 3)। सदूकी लोग मसीह के पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे, इसलिए प्राचीनों में से आने वाले कुछ फरीसी ही थे जो विश्वास करते थे। इस कारण पौलुस ''उस आशा ... जिसमें *ये* लोग आनन्दित होते हैं''[32] की बात कर पाया।

पुनरुत्थान की धारणा हिसाब देने के उस दिन के बारे में पहले से बताती है, जब सब लोग परमेश्वर के सामने खड़े होकर अपना-अपना हिसाब देंगे। इस कारण पौलुस ने कहा, ''इससे मैं आप भी यत्न करता हूं,[33] कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे''[34] (आयत 16)। अन्य शब्दों में वह कह रहा था कि, ''हे फेलिक्स, मैं तेरे सामने निर्दोष खड़ा हूं!''

एक आरोप जिसका अभी तक उत्तर नहीं दिया गया था, वह था मन्दिर को दूषित करने का। पौलुस ने अपनी सफाई देने के लिए जो कुछ वास्तव में हुआ था, वह बताते हुए आरम्भ किया: ''बहुत वर्षों के बाद[35] मैं अपने लोगों को दान पहुंचाने,[36] और भेंट चढ़ाने आया था'' (आयत 17)। पौलुस द्वारा लाया गया दान चुनिन्दा यहूदियों (यरूशलेम के यहूदी मसीहियों) के लिए था, परन्तु यहूदियों के लिए नहीं, सो उसकी बात कि वह अपने ''लोगों'' के लिए लाया था, सही थी। फेलिक्स को अवश्य ही ''दान और भेंट'' शब्दों का अर्थ समझ आ गया होगा।[37] स्पष्टत:, यह यहूदी साधन सम्पन्न और/अथवा प्रभावशाली व्यक्ति था; शायद वह और फंड निकाल सकता था (ध्यान दें आयत 26)!

पौलुस ने कहना जारी रखा: ''उन्होंने मुझे मन्दिर में शुद्ध दशा में [ध्यान दें 21:26] बिना भीड़ के साथ, और बिना दंगा करते हुए इस काम में पाया'' (आयत 18क)। इन तथ्यों का मन्दिर के रिकॉर्ड से पता किया जा सकता था। ''हां आसिया के कई यहूदी थे[38] उनके लिए उचित था कि यदि मेरे विरोध में उनकी कोई बात हो तो यहां तेरे साम्हने आकर मुझ पर दोष लगाते'' (आयतें 18ख,19)। आसिया के यहूदी वही लोग थे जिन्होंने आरम्भ में

पौलुस पर मन्दिर को दूषित करने का आरोप लगाया था (21:27, 28); यदि आरोप सही थे, तो उन्हें मुकदमे के लिए गवाहों के रूप में वहां रहना चाहिए था।[39] दोबारा, पौलुस ने यह प्रमाणित कर दिया कि यहूदी अगुवे उन आरोपों को प्रमाणित नहीं कर सकते थे जो उन्होंने उस पर लगाए थे (आयत 13)।

पौलुस ने महासभा के सदस्यों के सामने प्रत्यक्ष चुनौती देते हुए निष्कर्ष निकाला:

> या ये आप ही कहें, कि जब मैं महासभा के साम्हने खड़ा था, तो उन्होंने मुझ में कौन सा अपराध पाया? इस एक बात को छोड़ जो मैंने उनके बीच में खड़े होकर पुकारकर कहा था, कि मरे हुओं के जी उठने के विषय में आज मेरा तुम्हारे साम्हने मुकदमा हो रहा है[40] (आयतें 20, 21)।

मैं महायाजक और प्राचीनों के चेहरे घबराहट से लाल और क्रोधित होते देख सकता हूं। जब पौलुस सभा के सामने खड़ा था, तो उन्होंने उस पर व्यवस्था भंग करने का कोई आरोप नहीं लगाया।[41] बल्कि, उसके पुकार उठने पर कि ''मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकदमा हो रहा है'' (देखिए 23:6-10) सभा हिंसक हो गई थी। उनके पास पौलुस का कोई उत्तर नहीं था, जिससे वे फेलिक्स के सामने अपनी आवाज़ उठा सकते।

अपने आरोपियों के सामने विजयी पौलुस राज्यपाल के फैसले की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे स्वतन्त्र कर दिया गया होना चाहिए।

राज़ीनामे का फैसला (24:22, 23)

मैंने पहले उल्लेख किया था कि यहूदी अगुवे इस बात से अनजान थे कि फेलिक्स के पास पहले से ही रोमी कमांडर की रिपोर्ट थी। उन्हें यह भी अहसास नहीं था कि राज्यपाल को मसीहियत की थोड़ी बहुत समझ थी। लूका ने लिखा है कि फेलिक्स ''इस पन्थ की बातें ठीक-ठीक जानता था, ...''(आयत 22)।[42] उसने यह नहीं लिखा कि फेलिक्स को इस ''पंथ'' के बारे में कैसे पता चला। शायद कुरनेलियुस नामक एक रोमी अधिकारी (10:1-48) ने अपने विश्वास के विषय में राज्यपाल को बताया होगा। शायद फेलिक्स ने सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस से सुना था (8:40; 21:8), जब वह ''यीशु का सुसमाचार'' सुना रहा था (8:35)। शायद राज्यपाल होने के नाते, वह इस बात की जानकारी लेता रहता था कि कहां क्या हो रहा है। परन्तु, स्पष्टत: फेलिक्स का ज्ञान केवल उसके दिमाग तक ही पहुंचा था, दिल तक नहीं। ''उसने प्रकाश तो देखा, परन्तु अंधेरे में रहने को प्राथमिकता दी थी।''

उसके ज्ञान से उसका जीवन तो नहीं बदला, परन्तु इससे फेलिक्स यहूदी शिष्टमण्डल की चाल में आने से बच गया। पौलुस पर स्पष्टत: ''मार डाले जाने या बांधे जाने के योग्य'' कोई दोष नहीं था (23:29) और उसे छोड़ दिया जाना चाहिए था,[43] परन्तु राज्यपाल की

दिलचस्पी न्याय से बढ़कर यहूदियों को अपने साथ मिलाने में थी (ध्यान दें 24:27)। इसके अलावा वह पहले से ही यह विचार कर रहा था कि वह उस धन पर अपने लालची हाथ कैसे डाले जिसका उल्लेख पौलुस ने किया था (ध्यान दें आयत 26)।

इसलिए, फेलिक्स ने यह कहकर शिष्टमण्डल को ''टाल दिया कि जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा, तो तुम्हारी बात का निर्णय करूंगा'' (आयत 22ख)। इसका कोई संकेत नहीं दिया गया है कि फेलिक्स ने लूसियास को बुलाया या वह कमांडर उस मामले की जांच करवाने कभी कैसरिया में आया।[44] राज्यपाल की बातें केवल निर्णय न लेने का बहाना थीं। फेलिक्स ने अपनी बातों से उन्हें टाल दिया (ध्यान दें आयत 25)। यहूदी अगुओं ने इस केस को फेलिक्स की जगह किसी और के आने तक रोक देने का निर्णय लिया (ध्यान दें 25:1, 2)।

उसी समय, फेलिक्स ने ''सूबेदार को आज्ञा दी, कि पौलुस को सुख से रखकर रखवाली करना, और उसके मित्रों में से किसी को भी उसकी सेवा करने से न रोकना'' (24:23)। इस प्रेरित की स्थिति लगभग वैसी ही थी जैसी बाद में उसे रोम में एक सिपाही के साथ बान्धकर रखने के समय थी (28:16, 20) परन्तु ''जो उसके पास आते थे'' (28:31क) वह उन सबका स्वागत कर सकता था।

पौलुस ने अगले दो वर्ष ऐसे ही बिताए (24:27)। उस दौरान परमेश्वर की योजना के बारे में पौलुस अवश्य ही हैरान होगा। ऐसे लगता था जैसे वह रोम के निकट नहीं था और घूमकर प्रचार भी नहीं कर पाता था। शायद वह अपनी कोठरी में बैठकर लिखता[45] और प्रचार करता था जैसा उसने बाद में रोम में किया (28:31)। शायद परमेश्वर पौलुस को पिछले दो दशकों से अधिक समय में मिलने वाले शारीरिक तथा मानसिक कष्ट से निकलने के लिए समय दे रहा था।

बहुत से लेखकों का विचार है कि इस दो साल के स्वरभंग से लूका को सुसमाचार के अपने वृत्तांत और प्रेरितों के काम की खोज और लेखन को पूरा करने का अवसर मिल गया।[46] उन महीनों के दौरान, लूका यीशु के जीवन और यरूशलेम में कलीसिया के आरम्भिक दिनों की घटना के बहुत से प्रमुख पात्रों से बातचीत कर पाया होगा (नोट लूका 1:3)। वह पौलुस के साथ उसकी सेवकाई और यात्राओं की समीक्षा करने के लिए घण्टों बिता सका होगा। बर्टन कॉफमैन ने कहा:

> लूका की बड़ी मेहनत से मसीहियत के महिमामय आरम्भ के गवाहों की छान बीन और बातचीत के मामले में, कोई उस अनुग्रहकारी पूर्वप्रबन्ध को देख सकता है जो पौलुस प्रेरित द्वारा सहन किए गए अन्याय के ऊपर हावी रहा, उस कष्ट से प्रिय वैद्य लूका को बहुमूल्य पुस्तकों को लिखने का समय मिल गया।[47]

परमेश्वर के उद्देश्य जो भी रहे हों, पौलुस ने अपने आपको उनके अधीन कर दिया था। याद रखें कि जेल की एक कोठरी से उसने लिखा कि , ''प्रभु में सदा आनन्दित रहो;

मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो'' (फिलिप्पियों 4:4)।

सारांश

एन्टोनियो के किले में एक सूबेदार ने इस प्रेरित को ''पौलुस बन्धुआ'' (23:18) कहा। वह वाक्यांश प्रेरितों के काम के अन्तिम सात अध्यायों में पौलुस का चित्र दिखाता है। पौलुस ने स्वयं को ''मसीह यीशु का बन्धुआ'' (इफिसियों 3:1) और ''प्रभु में बन्धुआ'' (इफिसियों 4:1) कहा। ध्यान दें कि पौलुस ने अपने आपको *रोम* का कैदी नहीं, बल्कि ''*प्रभु का* बन्धुआ'' माना! पौलुस को उसका भाग मिल गया था क्योंकि उसका विश्वास था कि जहां उसे होना चाहिए वहीं पर *प्रभु ने* उसे रखा था; उसका विश्वास था कि प्रभु उससे बेहतर जानता है और वह उसमें से भलाई निकाल लेगा!

कई मसीही वास्तव में बन्धुआई में हैं। बहुत से अपने आपको उन परिस्थितियों में फंसा हुआ पाते हैं, जो उनके वश से बाहर की बात है। यदि आपको ऐसा लगता है, तो क्या आप उस स्थिति में पहुंच गए हैं जिसमें पौलुस था। या आप उन हालातों से चिड़े हुए और चिन्तित हैं जिन्हें आप बदल नहीं सकते? एक बार पूरी कोशिश करके क्या आप मामले को परमेश्वर के हाथ में देने के इच्छुक हैं?

वीनस, टैक्सास की जेल में रहने वालों के साथ काम करते हुए मैंने जेल की दीवारों के पीछे बहुत से ऐसे लोग देखे जो आत्मिक और भावनात्मक रूप से मसीह में स्वतन्त्र थे (रोमियों 8:2; गलतियों 5:1)। जेल के बाहर, मैंने भीड़ को पाप (रोमियों 6:17) और अपने ही भय (लैव्यव्यवस्था 26:17)से कैदी पाया है। स्वतन्त्र होना या जीवन के बन्धन में होना बुनियादी तौर पर मन की एक स्थिति है। प्रभु से प्रेम करने वालों को रिचर्ड लवलेस के शब्दों में सच्चाई मिलती है: ''न तो पत्थर की दीवारों से जेल बनती है, और न ही लोहे की छड़ों से पिंजरा''![48]

प्रवचन नोट्स

सी. ब्रूस वाइट ने अध्याय 24 को एक पाठ में समेटा: (1) एक झूठी गवाही (आयतें 1-9); (2) एक निष्पक्ष उत्तर (10-23); (3) एक अटल प्रवचन (आयतें 24, 25); (4) एक भयदायक प्रत्युत्तर (आयतें 25-27) (अप्रकाशित प्रवचन)।

वारेन डब्ल्यू वियर्सबे ने इस अध्याय का विभाजन मुख्य पात्रों के अनुसार किया: (1) तिरतुल्लुस: झूठा आरोप (आयतें 1-9); (2) पौलुस: सच्चे उत्तर (आयतें 10-21); (3) फेलिक्स: मूर्ख व्यवहार (आयतें 22-27)। (*द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री, Vol.1*)।

पाद टिप्पणियां

[1]बहुत सी पुस्तकों में यह पत्र कई रूपों में मिलता है। मेरे संस्करण में इसे कई संस्करणों से लिया गया है। [2]प्रभु द्वारा दर्शन देकर उसे आश्वासन के संदेश के *बाद* पौलुस इसके योग्य हो पाया था (23:11)। ''उम्मीद फिर से जगी'' पाठ देखिए। [3]यरूशलेम में बिताए थोड़े समय *के साथ* रोम की यात्रा *के साथ* 28:30 के बाद पौलुस द्वारा जेल में बिताए समय को कैसरिया में बिताए दो वर्षों *और* रोम में बिताए दो वर्षों *के साथ* जोड़ने पर, *कुल जोड़* कम से कम पांच वर्ष बनता है। [4]पिछले पाठ में प्रेरितों 23:30 पर नोट्स देखिए। [5]यह सम्भवत: पौलुस के कैसरिया में पहुंचने के पांच दिन बाद था, परन्तु यहूदियों को इस बात का पता चलने से कि वह जा चुका था पांच दिन बाद हो सकता है। [6]''यरूशलेम में ठुकराया गया'' पाठ में प्रेरितों 23:2 पर नोट्स देखिए। [7]ये ''पुरनिए'' सभा के दूसरे सदस्य होंगे। [8]तिरतुल्लुस एक लातीनी नाम है (''तिरतुल्लुस'' ''तीसरे'' के लिए लातीनी शब्द का छोटा रूप है); हम नहीं जानते कि वह रोमी था या यूनानी भाषा बोलने वाला यहूदी। [9]यूनानी शब्द के अनुवाद ''वकील'' का अक्षरश: अर्थ है ''वक्ता'' (देखिए KJV); तिरतुल्लुस ने कानून की शिक्षा पाई थी। [10]यरूशलेम समुद्र तल से लगभग 2400 फुट ऊपर कैसरिया तट पर स्थित था।

[11]फेलिक्स के तीसरे नाम के सम्बन्ध में यहां एक प्रश्न है। बहुत से विद्वान यह भी सोचते हैं कि यह ''मरकुस'' था। [12]समय-समय पर, यहूदिया का प्रबन्ध हाकिमों द्वारा किया जाता था, जो रोम के प्रतिनिधि होते थे। पीलातुस उनमें से एक था (मत्ती 27:2)। प्रेरितों के काम में जिन दूसरे राज्यपालों का नाम दिया गया है वे केवल फेलिक्स (नोट 23:24, 26) और फेस्तुस (फेस्तुस के बारे में हम अध्याय 25 और 26 में अध्ययन करेंगे) ही हैं। [13]चापलूसी के प्रति परमेश्वर के व्यवहार के लिए, पढ़िए नीतिवचन 26:28. [14]इस प्रकार के एक विद्रोह के उदाहरण के लिए, ''पौलुस, तुमने कैसे किया?'' पाठ में प्रेरितों 21:38 पर नोट्स देखिए। [15]प्रेरितों 13:50; 14:5, 19; 17:5-9, 13; 18:12-16; 19:23-41. [16]अनुवादित शब्द ''पंथ'' का यूनानी शब्द *hairesis* है जिससे हमें अंग्रेज़ी का शब्द ''heresy'' अर्थात विधर्म मिला है। [17]ध्यान दें मत्ती 2:23; 21:11; 26:71; मरकुस 1:24; लूका 4:34; 18:37; यूहन्ना 1:45. [18]इस पद में यीशु के अनुयायियों को ''नासरी'' कहलाने का कोई अधिकार नहीं मिलता। [19]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 74 पर प्रेरितों 18:13 पर नोट्स देखिए। [20]इस भाग में प्रेरितों 21:28, 29 पर नोट्स देखिए।

[21]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री* vol.1. [22]साइमन जे. किस्टमेकर, *द न्यू टैस्टामेन्ट कमैन्ट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़।* [23]एफ. एफ. ब्रूस, *द बुक ऑफ़ ऐक्ट्स,* rev. ed. [24]मैक्गर्वे ने समझा कि यह एक संकेत था कि पौलुस की ''जांच कोड़े मारकर'' होनी चाहिए (22:24) (*न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स ऑफ अपोस्टल्ज़,* vol.2)। [25]कई लोग समझते हैं कि आयत 22 में लूसियास को बुलाने की फेलिक्स की बात आयत 8 में तिरतुल्लुस के सुझाव के जवाब में थी, और यह *लूसियास* की जांच के लिए थी कि वहां वास्तव में क्या हुआ। [26]इन बातों की तुलना प्रेरितों 26:2 के कथन से कीजिए। [27]वाक्यांश ''भजन करने'' का अर्थ मन्दिर में आराधना करने, उस इलाके में अपने मसीही साथियों से मिलने या दोनों ही हो सकता है। पौलुस के कहने का अभिप्राय यह था कि वह यरूशलेम में शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए आया था, न कि विनाशकारी उद्देश्यों के लिए। [28]इसे सबसे सरल ढंग से इस प्रकार लिया जा सकता है कि वह यरूशलेम में केवल बारह दिन पहले ही आया था। मुकदमा पौलुस के कैसरिया में पहुंचने के पांचवें दिन हुआ था, इसलिए पौलुस को यरूशलेम में रहने के लिए केवल सात दिन ही मिले थे। कई लोगों का विचार है कि इतना सब होने के लिए यह समय अपर्याप्त था, और मानते हैं कि बारह दिन केवल उसके यरूशलेम में रहने के समय को कहा गया है जिसमें उसके कैद में होने के दिन भी शामिल हैं। कुछ भी हो, उन बारह दिनों में से अधिकतर समय वह जेल में ही रहा था, जिससे उसके पास गड़बड़ी फैलाने का समय ही नहीं था। [29]यह भी सम्भव है कि पौलुस याकूब, पतरस और यूहन्ना से किए समझौते को निभा रहा था (गलतियों 2:9)। [30]पौलुस ने कहा कि *यहूदी लोग* मसीहियत को एक पंथ कहते थे; स्वयं पौलुस ऐसा नहीं कहता था। कलीसिया न तो कभी पंथ थी और न ही होगी। (KJV में यहां पर ''heresy'' है, परन्तु आयत 5 में इसी यूनानी शब्द का अनुवाद ''पंथ'' किया गया है)।

[31]यद्यपि नया नियम आम तौर पर धर्मी तथा दुष्ट दोनों के पुनरुत्थान की बात करता है (नोट यूहन्ना 5:28, 29), परन्तु पौलुस ने केवल यहां पर ही इसका इस्तेमाल किया। सामान्यत:, पुनरुत्थान की बात करते या लिखते समय, पौलुस धर्मियों के जी उठने पर ज़ोर देता था (उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 15)। [32]महायाजक एक सदूकी था, जैसे उसके साथी भी होंगे; परन्तु वे राज्यपाल के सामने पौलुस को चुनौती देने से हिचकिचाते थे, क्योंकि वे फेलिक्स के सामने एक संयुक्त मोर्चे के रूप में रहना चाहते थे। [33]इस आत्मिक ''व्यायाम'' का महत्व शारीरिक व्यायाम से अधिक है। [34]इस भाग में ''खेद कैसे प्रकट करें'' पाठ में 23:1 के सम्बन्ध में विवेक पर नोट्स देखिए। [35]यदि 18:22 में यरूशलेम जाने की बात है (''तब ... चल दिया''), तो पौलुस को यरूशलेम गए पांच या अधिक वर्ष हो गए होंगे या यदि उस आयत में यरूशलेम जाने की बात नहीं है, तो पौलुस नगर में काफी देर से नहीं गया था। अन्य शब्दों में, उस सारे समय में वह गड़बड़ करने के लिए फेलिक्स के इलाके में नहीं था। [36]''दान'' परोपकार स्वरूप की गई सहायता को कहा जाता है (देखिए 3:2, 3, 10; 10:2, 4)। [37]''भेंट'' शब्द मन्दिर में दिए गए बलिदानों के लिए हो सकता है, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पौलुस ने प्राचीनों के सुझाव तक कोई बलिदान देने की इच्छा की हो (21:23, 24)। यदि उसने ऐसा करने की योजना बनाई थी, तो इससे उनका उद्देश्य उनके सुझाव से अधिक सफल हो गया होगा। ''भेंट'' शब्द सम्भवत: यहूदी मसीहियों के लिए लाई गई प्रेम-भेंट को कहा गया है। (2 कुरिन्थियों 9:12 में, हम देखते हैं कि चन्दे का एक उद्देश्य ''परमेश्वर का बहुत धन्यवाद'' करना था)। जहां पर हम रहते हैं, वहां चन्दे को आम तौर पर ''भेंट'' कहा जाता है। [38]मूल शास्त्र में विचार को विराम देने के लिए डैश का इस्तेमाल किया गया है। पौलुस ने वहां पर अपनी बात को विराम दिया। इस मुकदमे के सारे वृत्तांत में, तिरतुल्लुस के आरोप तथा पौलुस के प्रत्युत्तर दोनों में लूका ने सामान्य भाषण के सूक्ष्म अन्तर को पकड़ा। [39]आसिया के यहूदी कहां *थे?* सम्भवत:, एक बार पौलुस की हत्या के प्रयास में विफल हो जाने पर वे बीच में से निकल गए थे। यदि वे यरूशलेम के क्षेत्र में थे भी, तो कैसरिया में गए यहूदी शिष्टमण्डल ने उन्हें लाने का साहस नहीं किया होगा क्योंकि उनके पास अपने आरोप का कोई *प्रमाण* नहीं था। [40]पौलुस यह नहीं कह रहा था कि उसकी बात कोई ''अपराध'' था, न ही वह अपनी बात के लिए खेद प्रकट कर रहा था। उसके कहने का अर्थ वही था जो मेरे कहने का होता, ''मेरा दोष केवल इतना है कि मैं वही काम कर रहा हूं जो मुझे करने के लिए मिला है'' अर्थात, ''मेरा कोई दोष नहीं। ''

[41]यदि पुनरुत्थान पर विश्वास करना अपराध था, तो सभा के सभी फरीसी भी दोषी थे! [42]''ठीक-ठीक'' शब्द तुलना के लिए है। इस वाक्यांश का अर्थ ''जो उन्हें लगता था उससे'' या ''यहूदी अगुओं से'' या ''बहुत से लोगों से'' अधिक पता होना था। [43]यीशु के और पौलुस के मुकदमे में यहां पर एक और समानता मिलती है। दोनों ही बार-बार निर्दोष पाए गए थे, परन्तु छोड़े नहीं गए थे। [44]फेलिक्स के पास अधिकारी की रिपोर्ट पहले ही आ चुकी थी और उसे उसको बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। [45]जहां तक हम जानते हैं इनमें से कोई भी लेख सम्भालकर नहीं रखा गया। कई लोगों ने सुझाव दिया है कि ''जेल की पत्रियां'' (इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन) कैसरिया से लिखी गई थीं, परन्तु इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे रोम से लिखी गई थीं (देखिए फिलिप्पियों 4:22)। यह भी सुझाव दिया गया है कि पौलुस ने कैसरिया में कैद के दौरान इब्रानियों की पत्री लिखी थी; परन्तु हम पक्का नहीं कह सकते कि इब्रानियों की पत्री किसने लिखी इसलिए इसे केवल अनुमान ही मानना चाहिए। [46]यरूशलेम पहुंचने के समय लूका पौलुस के साथ था (21:17) और दो वर्ष बाद रोम से जाने के समय भी वह पौलुस के साथ ही था (27:1), इसलिए यह माना जाता है कि वह दो वर्षों तक उस साधारण क्षेत्र में रहा। [47]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स।* [48]क्रिस्टोफर मोरले, *द शोर्टर बारलेट'स फेमिलियर कुटेशंस,* ed. में उद्धृत।